

सतना  
12 दिसंबर 2024  
गुरुवार



दैनिक

# मीडिया ऑफिशियल

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित



एटिना सबालेका ...

@ पेज 7

## संक्षिप्त समाचार

**दक्षिण कोरिया के पूर्व रक्षा मंत्री ने खुदकुशी के लिए अंडरवियर का किया इस्तेमाल**



दक्षिण कोरिया (एजेंसी)। दक्षिण कोरिया में मार्शल लॉलॉग करने के मामले में जांच जारी है। इस बीच इस मामले में गिरफतार पूर्व रक्षा मंत्री किम योंग-हून ने आत्महत्या का प्रयास किया है। पुलिस के मुताबिक उसके को मंगलवार रात पूर्वी साल में डॉग्गू हिरासत केंद्र के बाथरूम में अंडरवियर से बनाई गई रस्सी से खुद को कारसी

## 20 लाख रुपये की रिश्वत लेते पकड़ा गया सरकारी वकील

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात एसेन्टी ने एक दीवानी अदालत के सरकारी वकील को 20 लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए रोपे हाथ पकड़ा है। अधिकारियों ने इस बार में जानकारी देते हुए बुधवार को बताया कि सरकारी वकील के 2 दलालों को भी एक पक्षकार से रिश्वत लेने के इस मामले में गिरफतार किया गया है। बताया जा रहा है कि शिकायतकर्ता से रिश्वत के रूप में कुल 50 लाख रुपये मारे गए थे जिसमें से 20 लाख रुपये वकील में पहले लेने की बात कही थी और वाकी का पैसा अदालत का आदेश आने के बाद दिया जाना था। वकील ने 20 लाख रुपये की रकम अपने बिचालियों को एक दुकान पर



देने के लिए कहा था। भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसी द्वारा जारी एक प्रेस रिलीज में पूरे मामले की जानकारी दी गई है। इस प्रेस रिलीज के मुताबिक, खेड़ा जिले के कठुनाल दीवानी अदालत में सरकारी वकील के रूप में काम कर रहे संजेंदर गढ़वाली को मंगलवार को शिकायतकर्ता से छूस लेते हुए रोपे हाथ गिरफतार किया गया। जिलसिंह में कहा गया है कि गढ़वाली के 2 बिचालियों को भी मंगलवार का एक फोटोकॉपी की दुकान पर जानकारी नहीं दी गई। उसके बाद वकील सुन्ना बल ने मंगलवार रात को बंगले के ऊपरी दिनांक पर जिले के चोपड़ा ब्लॉक के फेटेपुर गढ़वाली में पकड़ा।

यह लड़की बांग्लादेश के पंचागढ़ जिले से है और अपने परिवार के साथ इस्कॉन से जुड़ी हुई है। परिवार के सदस्यों का आरोप है कि बांग्लादेश में इस्कॉन से जुड़े हिंदू परिवारों को लगातार धर्मकथा मिल रही थीं, जिसमें खासरंग पर बच्चियों को उठाने की धर्मकथा शामिल थीं। नाबालिङ के नामा ने बताया कि बांग्लादेश में हिंदू परिवारों पर ही रहे लगातार हमले

## सिनेमा हॉल में पुष्पा-2 के शो के दौरान जमकर चले लात-घूंसे



लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ के रिंग रोड स्थित एक सिनेमा हॉल में गत के दौरान पुष्पा-2 का शो चल रहा था। इसी दौरान कुछ लोग हॉटिंग करने लगे। यहाँ पर जमकर गाली-गलोज और मारपीट हुई। सिंग गोड स्थित विन मल्टीलेक्स में जमकर लात-घूंसे चले। इसकी बजह से सिनेमा हॉल में अफरा-तफरी मच गई। जिसमें कुछ महिलाएं और बच्चे घायल हो गए।

सिनेमा हॉल के मैनेजर ने गिरफतार कर जेल भेज दिया। मल्टीलेक्स के मैनेजर की तरह पर पुलिस ने स्थिति को कंट्रोल किया। पुलिस ने बावाल कर रहे 6 लोगों को गिरफतार कर जेल भेज दिया। मल्टीलेक्स के मैनेजर

मल्टीलेक्स के मैनेजर ने शिकायत देवर के मैनेजर ने गिरफतार कर जेल भेज दिया।

मल्टीलेक्स के मैनेजर ने शिकायत देवर के मैनेजर ने गिरफतार कर जेल भेज दिया। इसी दौरान ये गुट आपस में लड़े लगे और मारपीट करने लगे। जांड़ा कर रहे पक्ष सभानान के बाद भी वहाँ से नहीं है और झगड़ा फसाद करने लगे। बताया जा रहा है कि मारपीट की बजह से सिनेमा हॉल में भगदड़ जैसे हालात बन गए। मैनेजर पर पुष्पा-2 पुलिस ने अरोपी को वहाँ से हटाया और अपने थाने थाने ले गए। इसके बाद मूली फिर से शुरू हुई।

इसका नाम 'भारत अंतरिक्ष स्टेशन' होगा

## 2035 तक भारत स्थापित करेगा अपना स्पेस स्टेशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने बुधवार को ऐलान किया कि भारत 2035 तक अपना सेस्ट स्टेशन स्थापित करेगा।

इसे 'भारत अंतरिक्ष स्टेशन'

नाम दिया जाएगा। इसके साथ ही, 2040

तक एक भारतीय को चंगमा पर भेजने

की योजना है।

दिल्ली में एक प्रेस कॉमेंस में डॉ. सिंह ने

बताया कि 2025 के अंत तक या 2026

की शुरुआत में, गणनायन मिशन के तहत

पहला भारतीय अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में जाएगा।

साथ ही भारत अपने गर्हे समृद्ध

मिशन के तहत 6,000 मीटर की गहराई में

मानव को भेजने की योजना बना रहा है।

उन्होंने कहा, सरकार सेस्ट सेक्टर को

मैनेज करने के लिए एक नए कानून पर

काम कर रही है। इस सेक्टर में घिरले चार

साल में प्राइवेट लेयर्स ने सेटेलाइट के

स्पेस के तहत बना इंडियन नेशनल सेस्ट

प्रमाण और लॉन्च में अहम भूमिका निभाएगी

है, जिसके चलते काफी सुधार हुआ है।

डॉ. सिंह ने कहा कि 2014 में जाहां सेस्ट

स्टार्ट-अप्स की संख्या सिर्फ एक थी, वह

अब बढ़कर 266 हो गई है। उन्होंने बताया

कि भारत ने श्रीहरिकोटा लॉन्च साइट से

अनुमति देने में अहम भूमिका निभाती है।



अब तक 432 विदेशी उपग्रह लॉन्च किए हैं, जिनमें से 397 पिछले 10 साल में ही लॉन्च किए गए हैं।

इसके साथ ही, सरकार ने डिपार्टमेंट ऑफ

स्पेस के तहत बना इंडियन नेशनल सेस्ट

प्रमाण एंड ऑर्थोडिजेन सेटर जैसी

सरकारी संस्था बनाई है जो इन्जींसिंग और

स्टार्ट-अप्स की प्रोत्साहित करने, रेगुलेट करने और

उन्होंने सेस्ट सेक्टर में काम करने की

अनुमति देने में अहम भूमिका निभाती है।

## दिल्ली में इस मौसम की अब तक की सबसे ठंडी सुबह

अमरवती (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में पहाड़ों से से अनेकांती ठंडी हवाओं के प्रवृत्ति से तापमान काफी नीचे गिर गया है। राजधानी में बुधवार को इस सर्दी का अब तक का सबसे कम न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया। परा तेजी से गिरकर 5 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे चला गया है। जबकि एक दिन पहले न्यूनतम



तापमान आठ डिग्री सेल्सियस था। वहाँ बुधवार को तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

मौसम विभाग (आईएमडी) ने कहा, "सफदरजंग में न्यूनतम तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस सर्दी के मौसम का सबसे कम तापमान है। पिछले साल भी 15 दिसंबर को न्यूनतम तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।"

गरिमा के विपरीत रहा है। कभी सरकार के पक्ष में तारीफ के कसीदे पढ़ने लगते हैं, कभी आज एसेस पार्टी के गांधीय अंतरिक्ष मल्लिकार्जुन खरों ने कहा, %बहुत पैंडा दुख के साथ कुछ तथ्यों को रखने आते हैं। भारत का उपराष्टपति पद दर्शक का दूसरा संबंधी बड़ा संवैधानिक पद है। राजधानी शहरी के गांधीय अंतरिक्ष मल्लिकार्जुन खरों ने कहा, %बहुत पैंडा दुख के साथ कुछ तथ्यों को रखने आते हैं। भारत का उपराष्टपति पद दर्शक का दूसरा संबंधी बड़ा संवैधानिक पद है। राजधानी शहरी के गांधीय अंतरिक्ष मल्लिकार्जुन खरों ने कहा, %बहुत पैंडा दुख के साथ कुछ तथ्यों को रखने आते हैं। भारत का उपराष्टपति पद दर्शक का दूसरा संबंधी बड़ा संवैधानिक पद है। राजधानी शहरी के गांधीय अंतरिक्ष मल्लिकार्जुन खरों ने कहा, %बहुत पैंडा दुख के साथ कुछ तथ्यों को रखने आते है





# विचार

# ग्राउंड जीरो पर बाल कल्याण क्षेत्र में ‘यूनिसेफ’ की भूमिका बहुत रीन

बाल कल्याण की बात हो या उनके अधिकारों की रक्षा, दोनों में प्रहरी की भूमिका निभाती है 'यूनिसेफ'। इसलिए यूनिसेफ का नाम सुनते ही मन-मस्तिष्क में बच्चे दृढ़ गिर्द घूमने लगते हैं। साथ ही उनकी समस्याओं और सुधारी प्रयासों का जिक्र भी होने लगता है। आज 'विश्व यूनिसेफ दिवस' है। एक ऐसी संस्था जो संसार के 190 देशों के बेहद दुर्गम स्थानों पर पहुंचकर कर बच्चों के अधिकारों की हिमायत के लिए मजबूती से लड़ती है। बाल कल्याण की सुविधाएं विश्व के प्रत्येक जरूरतमंद, कमजोर और वंचित बच्चों तक पहुंचे, इसलिए लिए यूनिसेफ की टीमें चौबीसों घंटों ग्रांउड जीरो पर तैनात रहती हैं। यूनिसेफ का मतलब होता है 'संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष' जिसका आरंभ 11 दिसंबर, 1946 को 'संयुक्त राष्ट्र महासभा' द्वारा किया गया था। शुरूआती वक्त में संस्थान में मात्र 43 देश शामिल हुए थे, लेकिन कुछ वर्षों बाद ये संख्या 100 पार कर गई। पर, आज इस संस्था में 190 मुल्क जुड़े हैं। संख्या में धीरे-धीरे इजाफा हो रहा है। यूनिसेफ के 5 लाख प्रतिनिधि इस समय परे संसार में कार्यरत हैं। वहीं, भारत में 18 हजार के करीब वर्कर दुर्गम स्थानों पर बाल कल्याण के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। बाल तस्करी की रोकथाम में इनकी अगल से टीमें कार्य करती हैं।

हिंदुस्तान में रोजाना करीब 69,000 बच्चे पैदा होते हैं। उन सभी नौनिहालों के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और बाल संरक्षण में यूनिसेफ इंडिया बेहतरीन कदम उठाने को संकल्पित होता है। मौजूदा समय में यूनिसेफ की टीमें युद्धग्रस्त यूक्रेन-रूस, ईरान-इराक, अफगानिस्तान जैसे मुल्कों में अधिकांश जुटी हैं। वहाँ अभावग्रस्त बच्चों की परवरिश करने के अलावा उनकी शिक्षा-स्वास्थ्य में लगे हैं। वैसे देखा जाए तो, विश्व को यूनिसेफ की कार्यशैली द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तब ज्यादा दिखी, जब इनके योद्धाओं ने बिना अपनी जान की परवाह किए युद्ध से आहत, असहाय, बेघर बच्चों को जरूरती सामानों की आपूर्ति, विभिन्न किस्म की सहायताएं और स्वास्थ्य में सुधार के अभियानों को चलाया। जैसे-जैसे समय बदला, यूनिसेफ ने अपनी कार्यशैली में और बदलाव किए। पहले इनका काम सिर्फ बाल अधिकारों की रक्षा के लिए जाना जाता था। लेकिन उसके बाद बच्चों के बेहतर जीवन को बनाने का भी जिम्मा इन्होंने अपने कंधों पर उठा लिया। फिलहाल वक्त में, यूनिसेफ की टीमें माताओं और नवजात शिशुओं के लिए एचआईवी की रोकथाम और उपचार, पर्याप्त पानी, स्वच्छ वातावरण, गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, बाल स्वास्थ्य व पोषण जैसे क्षेत्रों में भी कार्यरत हैं।

# इंडिया गढ़बंधन की रार से कांग्रेस से ज्यादा क्षेत्रीय दलों को होगा नुकसान

कमलेश पांडे

कांग्रेस के नेतृत्व वाले %ईंडिया गठबंधन% में नेतृत्व के सवाल पर जो मौजदा चिल्ह-पों मची हुई है और लोकसभा में नेता प्रतीक्षण राहुल गांधी के नेतृत्व पर एक बार फिर से जो सवाल उठाए जा रहे हैं, उससे न तो तुष्णमूल कांग्रेस नेत्री व पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का राजनीतिक भला होने वाला है और न ही उनकी सुर में सुर मिलाने वाले एनसीपी शरद पवार के शरद पवार-सुप्रिया सुले, शिवसेना यूबीटी के उद्धव ठाकरे-आदित्य ठाकरे, समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव-रामगोपाल यादव या आप पार्टी के अररिवंद केजरीवाल आदि जैसे नेताओं का। हाँ, इससे कांग्रेस आई की उस सियासी साख को धक्का अवश्य लगेगा, जो कि बमुश्किल उसने राहुल गांधी के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव 2024 के बाद हासिल कर पाई है।

हासल कर पाइ ह। राजनीतिक मामलों के जानकारों का स्पष्ट कहना है कि कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टी के लिए हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा की हार जरूर मायने रखती है, क्योंकि यह जीती हुई बाजी हारने के जैसा है। लेकिन सिफ़ इसको लेकर ही इंडिया गठबंधन का नेतृत्व कांग्रेस से छीन लेना कोई राजनीतिक बुद्धिमानी का काम प्रतीत नहीं होता है। शायद कांग्रेस भी इसे नहीं मानेगी और किसी भी राष्ट्रीय दल को क्षेत्रीय दलों के सामने चुटने भी नहीं टेकने चाहिए, यदि सत्ता प्राप्ति के लिए संख्या बल का खेल नहीं हो तो! बीजेपी भी यही करती है और अपने गठबंधन सहयोगियों को उनकी वाजिब औकात में रखती है। तीसरे-चौथे मोर्चे की विफलता के पीछे भी तो अनुशासनहीनता या अतिशय महत्वाकांक्षा का खेल ही तो था, जिसे



आपसी तालमेल की कमी की वजह से इसकी कई बार आलोचना भी होती रही है। इसी वजह से इसके प्रमुख सूत्रधार रहे जदयू नेता और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपना पाला बदल लिया और भाजपा के खेमे में चले गए। वो भी इंडिया गढ़बंधन के संयोजक का पद पाना चाहते थे, जो लालू प्रसाद के परोक्ष विरोध के चलते सम्भव नहीं हो पाया। ऐसे में संभव है कि ममता भी एकबार फिर से तीसरे मोर्चे को मजबूत करने की पहल करें

और नीतीश की तरह ही इंडिया गठबंधन को टाटा, बाय-बाय कर दें।

उल्लेखनीय है कि ममता बनर्जी का यह व्यापक उनकी पार्टी सांसद कल्याण बनर्जी द्वारा कांग्रेस और अन्य इंडिया ब्लॉक सहयोगियों को लेकर दिए व्यापक के बाद सामने आया है। तब कल्याण बनर्जी ने कहा था कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक को अपने अहंकार को अलग रखना चाहिए और ममता बनर्जी असेही दलाताजा का समना करना पड़ा जार उनके उम्मीदवारों की जमानत जब हो गई। जबकि कांग्रेस इंडिया ब्लॉक की सबसे बड़ी पार्टी है, जिसे अक्सर गठबंधन का वास्तविक नेता माना जाता है। यही वजह है कि टीएमसी ने लगातार ममता बनर्जी को गठबंधन की बागड़ोर संभालने की वकालत की है।

**बांग्लादेश- कट्टरपंथी जमात के निशाने पर हिंदुओं का जन-माल, सुरक्षा के लिए भारत सरकार करें पहल**

## दीपक कुमार त्यागी

बांग्लादेश में 5 अगस्त 2024 की दोपहर को हुए शेख हसीना की सरकार के ततापलट के बाद से ही वहाँ की कटूरपंथी जहरीली जमात के द्वारा हिंदुओं के जान-माल व मंदिर को चुन-चुन कर के निशान बनाया जा रहा है, इन कटूरपंथियों के द्वारा हिंदुओं के जान-माल को तब से ही

जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। हालांकि ततापलट के बाद बहुत सारे लोगों को यह उमीद थी कि अब देश में नोबेल पुरस्कार प्राप्त मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन होने के बाद वहाँ के हाल धीरे-धीरे पूरी तरह से सुधर जायेंगे। लेकिन अफसोस मोहम्मद यूनुस तो भारत व हिंदूओं के विरोध में अंधे होकर के खुद इन कदरपंथियों की गोद में जाकर बैठ गये हैं और कई माह बीतने के बाद भी बांग्लादेश के हालात सुधरने की जगह और खराब हो गये हैं।



देश व दुनिया के मीडिया के स्रोतों से बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले की हजारों की संख्या में जघन्य अपराध वाली घटनाएं घटित हो चुकी हैं, हिंदू इन घटनाओं में अपनी अनमोल जान-माल को गंवा रहे हैं, जो बांग्लादेश के अंदरूनी भयावह हालात के बारे में बताने के लिए काफी हैं। मीडिया स्रोतों से जो खबरें लोगों को निरंतर मिल रही हैं, वह देश व दुनिया के सभी हिंदुओं के साथ-साथ इंसान व इसानियत को बहुत बुरी तरह से झ़क़ज़ोर देने वाली है। व्योर्मिक तखापलट के बाद से बांग्लादेश में कट्टरपंथियों के द्वारा भारत विरोध व हिंदुओं के जान-माल को जानबूझकर जमकर के निशान बनाया जा रहा है। हिंदुओं को मोहम्मद यूसुस सरकार के संरक्षण प्राप्त इस्लामिक कट्टरपंथियों के द्वारा सराइम मौत के घाट तक उतारा जा रहा है। वहां हिंदुओं के मंदिर, मकान, दुकान व फेकियरों आदि को तोड़फोड़ कर के बड़े पैमाने पर आग के हवाले खुलेआम किया जा रहा है और अफसोस की बात यह है कि बांग्लादेश की पुलिस-फोर्स नियम-कायदे व कानून के अनुसार मानवता की रक्षा ना करके खुल्म-खुल्ला इन भारत व हिंदुओं की विरोधी कट्टरपंथियों की ज़मात का साथ दे रही है। लेकिन इस हाल में हम भारतवासियों के लिए सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि पूरे विश्व के किसी भी कौनें में अगर इस्लाम धर्म के किसी व्यक्ति के साथ किसी अन्य धर्म के व्यक्ति के द्वारा कोई अप्रिय घटना घटित कर दी जाती है, तो हमारे प्यारे देश भारत तक में भी इस्लामिक कट्टरपंथियों के इशारे पर उनके बहुत सारे लोगों को जमकर सङ्कर्क्षण पर लाता है ताके देश जाना है। लेकिन अब जब बांग्लादेश में हिंदुओं को चुन-चुन कर के निशान बनाया जा रहा उस वक्त इन लोगों की पूरी जमात की जबान से एक शब्द भी हिंदुओं की रक्षा की अपील तक के लिए नहीं निकल रहा है, जो स्थिति हम सभी सनातन धर्म के अनुयायियों व देश के सभी नीति-निर्माताओं के लिए चिंताजनक व विचारणीय है।

यहां आपको याद दिला दें कि पूरी दुनिया ने देखा है कि किस तरह से वर्ष 1971 में तत्कालीन भारत सरकार ने पाकिस्तानियों के अत्याचार से बांग्लादेश की जनता को एक अलग राष्ट्र बांग्लादेश का निर्माण करके अत्याचार से मुक्ति दिलाने का कार्य भारतीय सेना के जाबाजों के नेतृत्व में ही किया था, जिसके चलते ही भारत के लंबे समय से बांग्लादेश से मधुर संबंध रहे हैं। लेकिन मोहम्मद यूसुस के नेतृत्व में वहां की अंतरिम सरकार के बनने के बाद भारत-बांग्लादेश के संबंधों में बहुत तेज़ी के साथ कट्टवाहट शुरू हुई है। संबंध खराब करने के लिए रही-सही कसरर पाकिस्तान के इशारे पर बांग्लादेश के इस्लामिक कट्टरपंथियों के द्वारा हिंदुओं को निशान बनाकर परी की जा रही है। जिस बेहद तनावपूर्ण स्थिति के चलते ही संत चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के बाद अब दोनों देशों के बीच काफ़ी तल्खू कूटनीतिक भाषा का इश्तेमाल हो रहा है, जो स्थिति आने वाले समय में भारत-बांग्लादेश के संबंधों वैश्विक स्तर पर ठीक नहीं है।

यहां आपको एक बार फिर से याद दिला दें कि बांग्लादेश में शेष हसीना सरकार के पतन के बाद से ही भारत विरोधी गतिविधियां और हिंदुओं पर हमले के मामले बहुत तेज़ी से ज़रूर हो रहे हैं। चिंताजनक वाले चारों अपीली

सुरक्षा करने की मांग को लेकर व हमले के दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग को लेकर के पूरे बांग्लादेश में जगह जगह छोटे-बड़े विरोध प्रदर्शन निरंतर कर रहा है। जिन प्रदर्शनों में हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास बढ़-चढ़कर के भाग ले रहे थे और वह पूरे बांग्लादेश में धूम-धूमकर अत्याचार के खिलाफ हिंदुओं को संगठित कर रहे थे और भारत व दुनिया से बांग्लादेश के हिंदु संत चिन्मय कृष्ण दास बांग्लादेश की मोहम्मद युनस सरकार की आंखों का कांटा बने हुए थे, जिस वजह से ही हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास को बांग्लादेश सरकार के इशारे पर गिरफ्तार कर लिया गया था और वहाँ के न्यायालय में हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास की आवाज उठाने वाले अधिवक्ता पर भी जानलेवा हमला करके व उसके चैंबर में तोड़फोड़ करके उसको भी निशाना बनाया गया था।

वहीं बांग्लादेश के मुद्रे पर हाल ही में एक नियमित प्रेस ब्रीफिंग में सवाल पूछे जाने पर अमेरिकी विदेश विभाग के उप प्रवक्ता वेदात पटेल ने कहा था कि - हम इस बात को लेकर स्पष्ट हैं कि मौलिक स्वतंत्रता का सम्मान होना चाहिए। सरकारों को कानून के शासन का सम्मान करने की आवश्यकता है, उन्हें आधारभूत मानवाधिकारों का सम्मान करने की आवश्यकता है। हम इस बात पर हमेशा जोर देते रहेंगे। किसी भी तरह का विरोध शांतिपूर्ण होना चाहिए। हम इस बात पर बल देते हैं कि हिरासत मैं लिए गए लोगों को भी उचित प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए और उनसे अधारभूत मौलिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के अनुरूप व्यवहार किया जाना चाहिए। हालांकि उनका यह बयान औपचारिकता मात्र है, हालांकि उनके इस बयान में भी बांग्लादेश के हिंदुओं की सुरक्षा के लिए कोई ठोस आश्वासन या समाधान नज़र नहीं आता है, उनका बयान केवल एक औपचारिकता मात्र है।

वहीं हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के बाद बांगलादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने भी बांगलादेश की अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद यनुस पर जोरदार हमला करते हुए कहा कि उन्होंने बांगलादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने में नाकामयाबी दिखाई है, शेख हसीना ने मोहम्मद यनुस पर आरोप लगाया कि उन्होंने हिंदुओं के नरसंहार में सक्रिय रूप से भाग लिया है। शेख हसीना के इस बयान को दुनिया भर के टेकेदार बनने वाले ताकतवर देशों व मानवाधिकार संगठनों को संज्ञान लेकर के हिंदुओं के नरसंहार को रोकने के लिए मोहम्मद यनुस सरकार के खिलाफ वैश्विक स्तर पर कार्बवाई करनी चाहिए, जो पर अभी तक तो कोई पहल होती हुई नजर नहीं आ रही है।

हालांकि भारत सरकार भी बार-बार बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार को विभिन्न फोरम पर उठाने का कार्य निरंतर कर रही है, लेकिन उसके बाद भी बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर कट्रपथियों की जमात के द्वारा जबरदस्त अत्याचार जारी हैं और हमारे देश के धर्मनिष्पेक्षता के ठेकेदार बन चुके लोगों की जमात इस बेहद ज्वलंत मुद्दे पर चूपचाप बैठकर के अब भी तमाशा देख रही है, वह जम्मू-कश्मीर के हिंदुओं की तरह ही बांग्लादेश हिंदुओं को भी तिल-तिल कर मरते हुए देख रही है, जो बांग्लादेश चंद माह पहले छात्रों के हिस्से के आंदोलन में जल रहा था, वहां तख्तापलट के तुरंत बाद से ही भारत वह हिंदुओं के ऋग्यों का भूलकर के छात्रों का यह हिंसक आंदोलन हिंदू विरोधी आंदोलन में अचानक कैसे तब्दील हो गया है, देश व दुनिया के विशेषज्ञों को इस स्थिति का निष्पक्ष रूप से आंकलन करने चाहिए कि आखिरकार किस के उकसावे पर बांग्लादेश में अचानक से स्थिति भारत वह हिंदुओं के विरोधी कैसे हो गयी। विचारणीय यह है कि आरक्षण के विरोध की आग में ज़ुलसता हुए बांग्लादेश अचानक से भारत वह हिंदू विरोध की आग में कैसे ज़ुलसा। तख्तापलट के बाद भी हिंसा आज भी अनवरत रूप से जारी है, लेकिन अब दंगा-फसाद में चिन्हित करके हिंदुओं को मौत के घाट उतारना जारी है। हिंदुओं की सुरक्षा की दृष्टि से पूरे बांग्लादेश में जबरदस्त अस्थिरता का माहील व्यास है, मीडिया सूत्रों के अनुसार दंगाईयों को मोहम्मद युनुस सरकार के द्वारा सरकारी सरक्षण मिलने के चलते हिंदुओं के जान-माल की भारी क्षति होना अब भी निरंतर जारी है। जिसके चलते बांग्लादेश के हिंदुओं के साथ-साथ पूरी दुनिया के हिंदू अब भारत के प्रधानमंत्री ने रेढ़ मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, विदेश मंत्री एस. जयशंकर प्रसाद के साथ-साथ एनएसए अजीत डोभाल की तरफ बांग्लादेश के हिंदुओं की सुरक्षा करने की उम्मीद से देख रहे हैं, उन्हें उम्मीद है कि भारत सरकार अब बयानबाज़ी से इतर हांकर के धरातल पर ठोस कदम उठाकर के तल्काल बांग्लादेश में भारत विरोधी सभी गतिविधियों वह हिंदुओं के नसंहार पर नकेल क्षेगी।







